count me IN!

बहिष्करण तर्कों का प्रतिवाद:

समावेशी अधिकारों के लिए एक पैरवी संसाधन

स्वीकृतियाँ

यह प्रकाशन काउंट मी इन! (CMI!) कंसोर्टियम के अपोजिशन वर्किंग ग्रुप द्वारा डच विदेश मंत्रालय द्वारा उपलब्ध कराए गए फंड के माध्यम से विकसित किया गया था। CMI! एक जेंडर समान और न्यायपूर्ण दुनिया की कल्पना करता है, जहाँ सभी महिलाएं और लड़कियाँ, और गैर-बाइनरी, जेंडर गैर-अनुरूप, ट्रांस और इंटरसेक्स व्यक्ति अपने अधिकारों का पूरी तरह से आनंद लेते हैं और अपनी पूरी क्षमता से जीवन बिताते हैं। CMI! डच विदेश मंत्रालय के साथ एक रणनीतिक साझेदारी है और इसमें सदस्य संगठन मामा कैश (MC), एसोसिएशन फॉर वीमेन राइट्स इन डेवलपमेंट (AWID), क्रिया (CREA), जस्ट एसोसिएट्स (JASS), और सिस्टर फंड्स अर्जेंट एक्शन फंड फॉर फेमिनिस्ट एक्टिविज्म (UAF-FA) और अर्जेंट एक्शन फंड अफ्रीका (UAF-Africa) शामिल हैं। कंसोर्टियम के रणनीतिक भागीदारों में यौनकर्मी (सेक्स वर्कर) के नेतृत्व वाले रेड अम्ब्रेला फंड (RUA) और डच जेंडर प्लेटफॉर्म WO = MEN शामिल हैं।

साहित्यिक कार्य और परिष्करण

डेनिएला मारिन प्लेटरो – कोऑर्डिनेटर, CMI! अपोजिशन वर्किंग ग्रुप कोऑर्डिनेटर
ऑड्रे मुगेनी एम और राधिका सक्सेना - सह-अध्यक्ष, CMI! अपोजिशन वर्किंग ग्रुप और CREA अनीसा डबौसी - सह-अध्यक्ष, CMI! अपोजिशन वर्किंग ग्रुप और AWID

अनुवाद

सुनीता भदौरिया और शर्मिला भूषण - ए.एस. इंटरनेशनल

डिज़ाइन

Studio We are stories

प्रस्तावना

दुनिया भर में, जेंडर न्याय और समानता को आगे बढ़ाने वाले आंदोलन तथाकथित "जेंडर-आधारित अधिकारों" के इर्द-गिर्द बने विरोध के उछाल का सामना कर रहे हैं। हालाँकि ये कहानियाँ अक्सर महिलाओं की सुरक्षा का दावा करती हैं, लेकिन वास्तव में ये सेक्स और जेंडर के बारे में एक ऐसी समझ को सुदृढ़ करते हैं जो बहिष्कारी और द्विआधारी है, और इन्हें एक अनिवार्य जैविक आवश्यकता के रूप में देखते हैं। इस तरह के ढांचे ट्रांस, इंटरसेक्स, गैर-बाइनरी और जेंडर-विविध लोगों की जीवित वास्तविकताओं को मिटा देते हैं, साथ ही पितृसत्तात्मक प्रणालियों के खिलाफ सामूहिक संघर्ष को कमज़ोर करते हैं जो सभी महिलाओं और ढांचे से बाहर रखे गए जेंडरों को नुकसान पहुँचाते हैं।

जेंडर और अधिकारों के खिलाफ विरोध की बढ़ते विरोध का जवाब देने के लिए, CMI! अपोजिशन वर्किंग ग्रुप ने इस संसाधन को पैरोकारों के लिए एक व्यावहारिक और सशक्त उपकरण के रूप में विकसित किया गया है। "सेक्स-आधारित अधिकार" ढांचे की भ्रांति को समझना: सेक्स-आधारित अधिकार बहस में बहिष्करण राजनीति का एक संक्षिप्त विश्लेषण, के साथ-साथ इस संसाधन का उद्देश्य सभी महिलाओं और लड़कियों के साथ-साथ गैर-बाइनरी, किसी जेंडर में न बंधने वाले (नॉन-कॉन्फ़ॉर्मिंग), ट्रांस और इंटरसेक्स लोगों की क्षमता को मज़बूत करना है, ताकि बहिष्करण कथाओं का प्रभावी ढंग से मुकाबला किया जा सके। अधिकार-आधारित पलट-जवाब, व्यावहारिक पैरवी नोट्स और स्पष्ट संदेश मार्गदर्शन प्रदान करके, हम समावेशी आंदोलनों का समर्थन करना चाहते हैं जो सभी के लिए जेंडर न्याय और समानता को आगे बढ़ाते हैं।

हमने इन संसाधनों को एक साझा विश्वास से बनाया है: कि नारीवादी, मानवाधिकार और समानता आंदोलन समावेशी, साक्ष्य-आधारित और एकजुटता में निहित रहना चाहिए। "जेंडर-आधारित अधिकार" तर्क का उदय न केवल जेंडर और यौन विविधता के खिलाफ एक प्रतिक्रिया को दर्शाता है, बल्कि आंदोलनों को विभाजित करने और सामूहिक कार्यवाही को कमज़ोर करने के लिए एक सोच-समझकर किए गए प्रयास को भी दर्शाता है। हमारा मकसद यह सुनिश्चित करना है कि पैरोकार और सहयोगी ऐसी बहिष्कार को बढ़ावा देने वाली कहानियों को चुनौती देने के लिए ज्ञान, भाषा और आत्मविश्वास से लैस हों - और एक ऐसे नारीवाद की पुष्टि करें जो सभी की गरिमा, स्वायत्तता और अधिकारों को बनाए रखे।

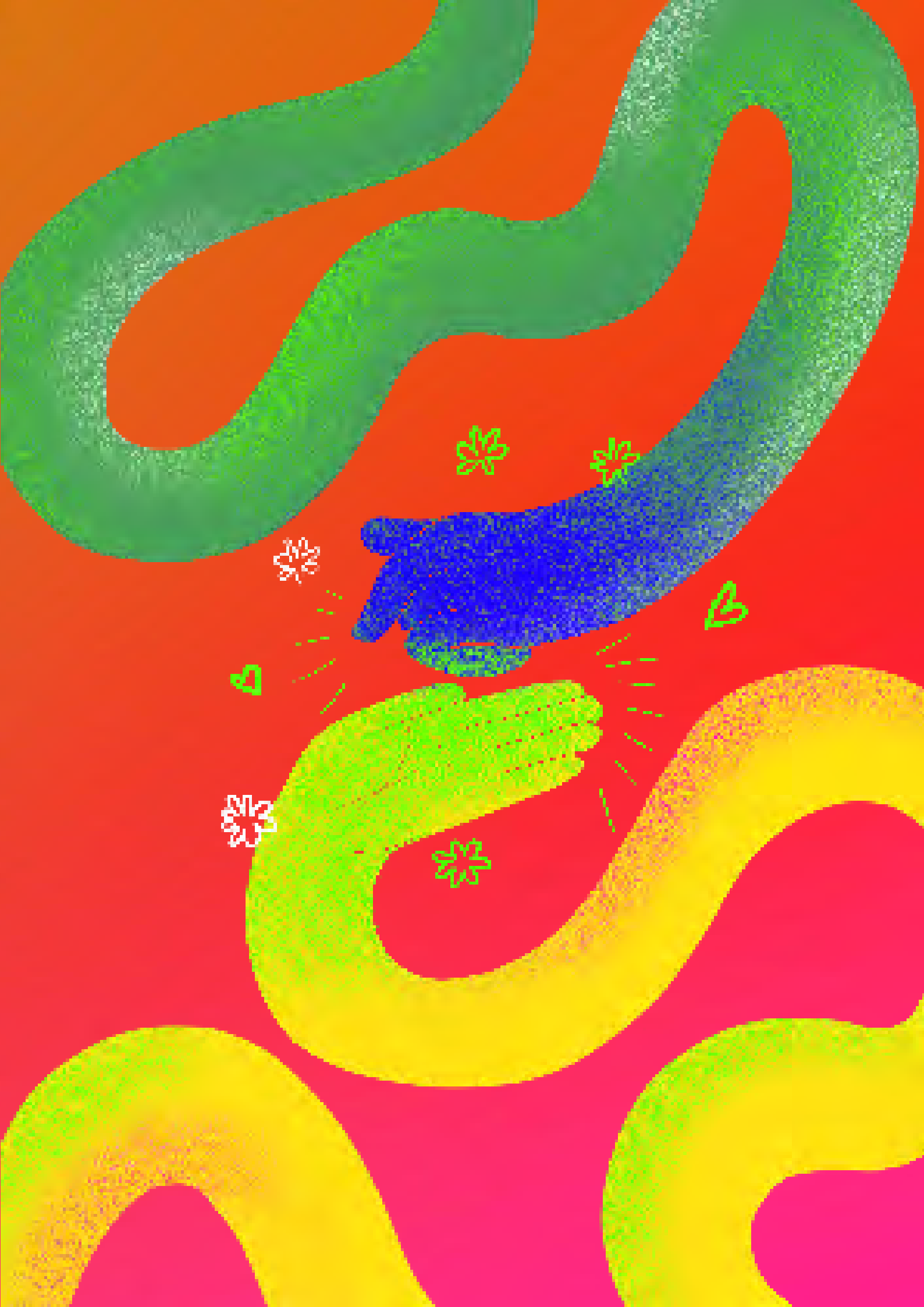

इस संसाधन का संदर्भ और उद्देश्य

'सेक्स-आधारित अधिकार' ढांचे मूल रूप से जेंडर, जेंडर पहचान, यौन रुझान, शारीरिक स्वायत्तता, और सत्ता कैसे काम करती है, इसकी व्यापक अंतर्संबंधीय (इंटरसेक्शनल) समझ के बजाय सेक्स (महिला/पुरुष) की एक निश्चित और द्विआधारी समझ के आधार पर अधिकारों और सुरक्षा की मान्यता को बढ़ावा देकर जेंडर अनिवार्यता को आगे बढ़ाने की कोशिश करते हैं। वे ट्रांस और सिसजेंडर महिलाओं के अधिकारों को एक-दूसरे के खिलाफ खड़ा करते हैं और महिलाओं की पहचान और शरीर की विविधता को मिटा देते हैं। ये ढांचे व्यवस्थित रूप से ट्रांसजेंडर, इंटरसेक्स और गैर-बाइनरी लोगों - अक्सर वही व्यक्ति जो हाशियाकरण के सबसे गंभीर रूपों का सामना करते हैं - को बाहर कर देते हैं।

'सेक्स-आधारित अधिकार' तर्कों का उपयोग नीतिगत बहस, कानूनी चुनौतियों और सार्वजनिक चर्चाओं में अधिकाधिक किया जा रहा है। हालाँकि इसे महिलाओं के लिए सुरक्षात्मक और नारीवादी सिद्धांतों पर आधारित होने के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, ये उन सभी के लिए सुरक्षा को सीमित करता है जो जेंडर आधारित हिंसा[1] और जेंडर आधारित भेदभाव[2] का सामना करते हैं।

यह संसाधन पैरोकारों, नीति निर्माताओं और सहयोगियों को साक्ष्य-आधारित उपकरणों से लैस करता है। ये उपकरण सात मुख्य सेक्स-आधारित तर्कों को पहचानने, समझने और प्रभावी ढंग से मुकाबला करने में मदद करते हैं जो अक्सर ट्रांस, इंटरसेक्स और जेंडर गैर-बाइनरी व्यक्तियों को कानूनी सुरक्षा और नीतियों से बाहर करने के लिए उपयोग किए जाते हैं।

---

[1] **जेंडर आधारित हिंसा** का अर्थ किसी व्यक्ति को उनके जेंडर के आधार पर नुकसान पहुँचाने वाले काम से है। इसमें शारीरिक, यौन, मनोवैज्ञानिक या आर्थिक नुकसान शामिल है और यह असमान शक्ति संबंधों, भेदभाव और सामाजिक मानदंडों में निहित है जो जेंडर असमानता को लागू करने वाले सामाजिक नियमों पर आधारित है।

[2] **जेंडर आधारित भेदभाव** का अर्थ सेक्स या जेंडर के आधार पर किए गए किसी भी भेद, बहिष्करण या प्रतिबंध से है जो मानव अधिकारों और मौलिक स्वतंत्रता की मान्यता, आनंद या अभ्यास को बाधित या रद्द करता है

पैटर्न को समझना

इस संसाधन में जिन तर्कों का विश्लेषण किया जया है वे कई प्रमुख विशेषताओं को साझा करते हैं:

- वे महिलाओं की सुरक्षा, वैज्ञानिक निष्पक्षता, प्रतिस्पर्धा में निष्पक्षता, स्वतंत्र अभिव्यक्ति, नारीवादी सिद्धांतों, सामुदायिक सुरक्षा और सुरक्षा नीति जैसे व्यापक रूप से माने जाने वाले **मूल्यों को आकर्षित करते हैं।** यह उन्हें विशेष रूप से असरदार बनाता है क्योंकि वे उन वास्तविक चिंताओं से जुड़े हुए लगते हैं जो बहुत से लोग साझा करते हैं।

- **ये कहानियाँ अक्सर झूठे द्वंद्व पैदा करती हैं, जैसे कि यह कहना कि सुरक्षा और समावेशन एक साथ नहीं चल सकते हैं या अधिकार और न्याय एक साथ नहीं चल सकते।**

- वे जैविक सेक्स, जेंडर पहचान और सामाजिक गतिशीलता के बारे में **बहुत आसान कहानियों पर भरोसा करते हैं** जो इंसानी अनुभव और वैज्ञानिक समझ की मुश्किलों को नज़रअंदाज़ करते हैं, साथ ही उन तरीकों को भी मिटा देते हैं जिनसे सत्ता काम करती है।

- वे समस्या के वैध कारणों को संबोधित करने के बजाय **वास्तविक चिंताओं को कुछ विशेष समूहों को बलि का बकरा बनाने की ओर मोड़ देते हैं।** उदाहरण के लिए, पुरुष हिंसा के बारे में असली चिंताओं को ट्रांस महिलाओं की तरफ मोड़ दिया जाता है, न कि उन पितृसत्तात्मक प्रणालियों या मानदंडों को खत्म करने की ओर जो ऐसी हिंसा को बढ़ावा देते हैं।

- वे उन नीतियों को बढ़ावा देते हुए **नारीवादी भाषा को हथियार बनाते हैं** जो अंत में सभी महिलाओं और उन लोगों को नुकसान पहुँचाती हैं जो अपने जेंडर के कारण प्रणालीगत बहिष्कार और भेदभाव का अनुभव करते हैं।

यह संसाधन क्यों ज़रूरी है

सेक्स-आधारित तर्कों के वास्तविक दुनिया में परिणाम होते हैं। जब ये तर्क नीति को आकार देने में सफल होते हैं, तो उनका परिणाम निम्न होता है:

- **भेदभावपूर्ण कानून** जो ट्रांसजेंडर, इंटरसेक्स और जेंडर-विविध लोगों को बुनियादी अधिकारों और सेवाओं से वंचित करते हैं।
- **ढांचे से बाहर रखे गए समुदायों[3] का बढ़ता उत्पीड़न, हिंसा और बहिष्करण।**
- **कमज़ोर गठबंधन** जो अन्यथा पितृसत्ता[4], हिंसा और असमानता के बारे में साझा चिंताओं को दूर करने के लिए एक साथ काम कर सकते हैं।
- ये तर्क जिन नारीवादी मूल्यों और वैज्ञानिक सिद्धांतों को बनाए रखने का दावा करते हैं, उन्हीं का **क्षरण** होता है।

इस संसाधन का उपयोग कैसे करें

प्रत्येक तर्क के लिए, यह संसाधन निम्न प्रदान करता है:

- मुख्य दावा और अंदरूनी मान्यताएं जो तर्क को आगे बढ़ाती हैं
- विश्लेषण कि ये तर्क अलग-अलग दर्शकों को क्यों पसंद आते हैं
- सबूतों के आधार पर सच्चाई जो तथ्यात्मक गलतियों और तार्किक कमियों को सामने लाती है
- इन तर्कों के जवाबी ढांचे (काउंटर-फ्रेम)

कुछ मामलों में, वास्तविक दुनिया के संदर्भों में इन अंतर्दृष्टि का उपयोग करने के लिए व्यावहारिक मार्गदर्शन के साथ पैरवी नोट भी पेश किए गए हैं।

[3] **ढांचे से बाहर रखे गए समुदाय, जनसंख्या, लोगों के समूह** वे हैं जो व्यवस्थित रूप से हाशिए पर हैं और सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रणालियों को संगठित करने के तरीके के कारण अधिकारों, संसाधनों और अवसरों तक पूर्ण पहुँच से वंचित हैं। उनका बहिष्कार आकस्मिक नहीं है, बल्कि उनका निर्माण संस्थानों, कानूनों और सांस्कृतिक मानदंडों में किया गया है।

[4] **पितृसत्ता** सत्ता की एक राजनीतिक-सामाजिक प्रणाली है जो पुरुषों को एक समूह के रूप में विशेषाधिकार देती है। यह रोजमर्रा के रिश्तों, मानदंडों और संस्थानों को उन तरीकों से आकार देता है जो पुरुष सत्ता और महिला अधीनता को बनाए रखते हैं।

1. "मूल" तर्क

"महिलाओं के अधिकार जैविक सेक्स पर आधारित होने चाहिए, न कि जेंडर पहचान पर। केवल यही तरीका है जिससे महिलाओं के हिंसा के अनुभवों को वास्तव में संबोधित किया जा सकता है।"

इसके पीछे के दावे:

- जैविक सेक्स द्विआधारी, अपरिवर्तनीय और सामाजिक रूप से प्रासंगिक है जो जेंडर पहचान की अवहेलना नहीं कर सकता है। जेंडर पहचान एक व्यक्तिपरक और चुनी हुई आंतरिक भावना है जो जैविक सत्य की जगह नहीं ले सकती है और कानून, नीति और महिलाओं के अधिकारों की नींव नहीं बन सकती है।
- दुनिया भर में और पूरे इतिहास में, महिलाओं और लड़कियों ने अपने सेक्स और / या प्रजनन भूमिकाओं के आधार पर भेदभाव का अनुभव किया है। सेक्स महिलाओं और लड़कियों के भेदभाव और हिंसा के अनुभव के केंद्र में है।
- पुरुषों और महिलाओं की परिभाषा को उनके जैविक सेक्स से अलग करने और "महिलाओं" की कानूनी श्रेणी को मिटाने के लिए, एक ठोस अंतरराष्ट्रीय प्रयास किया जा रहा है।
- महिलाओं और लड़कियों को जेंडर निष्पक्ष भाषा के उपयोग द्वारा और जेंडर पहचान को केंद्रित करके, भाषा और कानून से मिटाया जा रहा है।
- महिलाओं और लड़कियों द्वारा अनुभव की जाने वाली हिंसा का सही मायने में जवाब देने के लिए कानूनों और नीतियों को "सेक्स पर, न कि जेंडर" पर आधारित किया जाना चाहिए। यदि जैविक महिलाओं की श्रेणी को सेक्स-आधारित उत्पीड़न से मिटा दिया जाता है या अलग कर दिया जाता है, तो उस उत्पीड़न को पहचानना और इस प्रकार, मुकाबला करना मुश्किल हो जाता है।

यह तर्क क्यों सही लगता है:

- यह अपना केस बनाने के लिए विज्ञान और "जैविक अंतर" और "यौन द्विरूपता" (डाइमॉर्फिज़म) के विचारों का उपयोग करता है।
- यह महिलाओं की सुरक्षा के विचार पर बनाया गया है।
- यह दुनिया भर में महिलाओं और लड़कियों द्वारा अनुभव की जाने वाली हिंसा की अदृश्यता के बारे में वास्तविक चिंताओं पर ध्यान खींचता है।
- यह 'ट्रांसजेंडरवाद (ट्रांसजेंडरिज्म)' और 'जेंडर विचारधारा' जैसी दोषपूर्ण अवधारणाओं को बदनाम करने की अपील करता है।

---

[5] **यौन द्विरूपता (सेक्सुअल डाइमॉर्फिज्म)** का मतलब एक ही प्रजाति के नर और मादा के बीच शारीरिक या व्यवहार से जुड़े ऐसे लक्षण हैं जो सीधे प्रजनन अंगों से नहीं जुड़े होते हैं और इसमें शरीर का आकार, खास व्यवहार पैटर्न या सेकेंडरी सेक्सुअल विशेषताएं शामिल हो सकती हैं।

[6] **"ट्रांसजेंडरिज़्म"** एक शब्द है जिसे ट्रांसजेंडर बराबरी के विरोधी गलत और नुकसानदायक तरीके से यह बताने के लिए इस्तेमाल करते हैं कि ट्रांस होना एक राजितिक सोच है, न कि किसी के व्यक्तित्व (पर्सनहूड) का असली पहलू। ज़्यादा जानकारी के लिए https://glaad.org/term-to-avoid-transgenderism/ देखें.

[7] **"जेंडर विचारधारा"** एक राजनीतिक और बयानबाजी वाला शब्द है जिसका इस्तेमाल अक्सर (खासकर रूढ़िवादी और जेंडर-विरोधी आंदोलन द्वारा) नारीवादी, LGBTQ+, और क्वीयर स्कॉलरशिप और एक्टिविज्म को गलत साबित करने के लिए किया जाता है। यह किसी सही अकादमिक सिद्धांत (एकेडमिक थ्योरी) को नहीं, बल्कि एक ऐसी फ्रेमिंग रणनीति को बताता है जो जेंडर समानता, यौन विविधता और प्रजनन अधिकारों के बारे में विचारों को एक खतरनाक या झूठी "विचारधारा" के तौर पर दिखाती है। ज़्यादा जानकारी के लिए - https://www.awid.org/sites/default/files/2022-08/Final%20EN%20Web%20-%20Gender%20Ideology%20Brief%20-%20July%202022.pdf देखें.

मिथक को दूर करना (डिबंकिंग):

> **महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ हिंसा केवल जीव विज्ञान का नतीजा नहीं है - यह जेंडर असमानताओं और अपेक्षाओं से पैदा होती है।**

- जो चीज़ लोगों को कमज़ोर बनाती है या बोझ पैदा करती है, वो उनका जीव विज्ञान नहीं है, बल्कि समाज के नियम और नुकसानदायक सोच है, जो उनके तय सेक्स, या दूसरे शब्दों में, उनके जेंडर से जुड़ी होती है।[8] [9]
- जैविक सेक्स स्वाभाविक रूप से किसी को कमज़ोर नहीं बनाता है। जो चीज़ कमज़ोरी पैदा करती है, वह यह कि समाज भूमिकाओं के माध्यम से जेंडर मतभेदों की व्याख्या करता है।
- अंतरराष्ट्रीय मानव अधिकार कानून में "सेक्स" के आधार पर भेदभाव के निषेध की समझ काफी विकसित हुई है, जिसमें न केवल शारीरिक विशेषताएं बल्कि जेंडर रूढ़ियों[10] के सामाजिक निर्माण को भी शामिल किया गया है।
- महिलाओं के खिलाफ सभी प्रकार के भेदभाव के उन्मूलन पर कन्वेंशन (CEDAW) समिति सहित कई मानव अधिकार निकायों ने समझाया है कि CEDAW और अन्य संधियों के तहत पहले जिसे "सेक्स" के आधार पर भेदभाव के रूप में वर्णित किया गया था, वह वास्तव में जेंडर भेदभाव है।[11] ऐसा इसलिए है क्योंकि यह समाज और राजनीति के जैविक मतभेदों के इलाज के तरीके का परिणाम है, न कि स्वयं मतभेदों का।
- CEDAW समिति ने सामान्य सिफारिश संख्या 28[12] के माध्यम से स्पष्ट किया है कि सरकारों को ट्रांसजेंडर महिलाओं के खिलाफ भेदभाव सहित अंतर्संबंधीय (इंटरसेक्शनल) भेदभाव को संबोधित करना चाहिए।

[8] बटलर, जे. (1990). जेंडर ट्रबल: फेमिनिज्म एंड द सबवर्शन ऑफ़ आइडेंटिटी. न्यूयॉर्क: रूटलेज.; ईगली, ए. एच., और वुड, डब्ल्यू. (2012).
[9] सोशल रोल थ्योरी. पी. वैन लैंग, ए. क्रुग्लांस्की, और ई. टी. हिगिंस (संपादक), हैंडबुक ऑफ़ थ्योरीज़ इन सोशल साइकोलॉजी (पेज 458–476)। सेज।
[10] आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों पर समिति, सामान्य टिप्पणी संख्या 20, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों में भेदभाव न करना (आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय समझौते का अनुच्छेद 2, पैरा 2), 2009, पैरा 20
[11] कृपया महिलाओं के खिलाफ भेदभाव के उन्मूलन पर समिति, महिलाओं के खिलाफ सभी प्रकार के भेदभाव के उन्मूलन पर कन्वेंशन के अनुच्छेद 2 के तहत राज्यों के दलों के मुख्य दायित्वों पर सामान्य सिफारिश संख्या 2, 5, संयुक्त राष्ट्र डॉक CEDAW/C/GC/28 (16 दिसंबर, 2010) देखें।
[12] इबिडेम (उसी स्रोत और पृष्ठ से लिया गया)

“जैविक सेक्स” सरल नहीं है।

- वैज्ञानिक प्रमाण दर्शाते हैं कि सेक्स विशेषताएं एक स्पेक्ट्रम पर मौजूद हैं, जो शारीरिक, हार्मोनल और गुणसूत्र विविधता की एक विस्तृत श्रृंखला को दर्शाती हैं।[13]

- इंटरसेक्स लोग अनुमानित जनसंख्या 1.7% हिस्सा हैं, जो दर्शाता है कि कठोर सेक्स द्विआधारिता (बायनेरीज़) मानव विविधता को दर्शाने में विफल रहते हैं।[14]

- जन्म के समय सेक्स निर्धारित करना[15] एक सामाजिक प्रक्रिया है, न कि एक निश्चित जैविक सत्य।[16] [17] [18] [19] सेक्स को जन्म के समय बाहरी जननांग के रूप के आधार पर तय किया जाता है, जेनेटिक्स (आनुवंशिकी) के आधार पर नहीं। बाहरी जननांग की जांच जन्म के बाद सेक्स निर्धारित करने का सबसे सरल तरीका है, लेकिन (जेनेटिक) आनुवंशिक मूल्यांकन की तुलना में कम विश्वसनीय है। बाहरी जननांग में विविधता होने की संभावना बहुत ज़्यादा होती है।[20]

बहिष्करण जीते जागते लोगों को नुकसान पहुँचाता है।

- जब सुरक्षा “जन्म के समय निर्धारित सेक्स” तक सीमित होती है तब ट्रांस महिलाओं, ट्रांस पुरुषों, इंटरसेक्स और गैर-बाइनरी लोगों को प्रणालीगत बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

- पितृसत्ता केवल “जैविक महिलाओं” को लक्षित नहीं करती है - यह किसी जेंडर में न बंधने वाले (नॉन-कॉन्फ़ॉर्मिंग) व्यक्तियों, और ऐसे व्यक्ति जो सख़्त जेंडर मानदंडों में फिट नहीं होते हैं - को दंडित करती है।

- स्त्री जाति से द्वेष (मिसॉजनी)[21] और ट्रांस स्त्री जाति से द्वेष (ट्रांसमिसॉजनी)[22] अक्सर एक-दूसरे से मिलती-जुलती हैं, यह दर्शाता है कि पितृसत्ता सेक्स और जेंडर पहचान, दोनों को नियंत्रित करती है।

---

[13] रहमान-सटर, सी., केसलर, टी. एम., शूरमान, जे., और ज़ेहंडर, पी. (2023). इज़ क्स स्टिल बाइनरी? डॉयचेस अर्ज़्टेब्लैट इंटरनेशनल, 120(13), 216–222. https://doi.org/10.3238/arztebl.m2023.0084

[14] ब्लैकलेस, एम., चारुवस्त्र, ए., डेरिक, ए., फॉस्टो-स्टर्लिंग, ए., लॉज़ेन, के., और ली, ई. (2000). हाऊ सेक्सुअली डाइमॉर्फिक आर वी? रिव्यू एंड सिंथेसिस. अमेरिकन जर्नल ऑफ़ ह्यूमन बायोलॉजी, 12(2), 151-166.

[15] **जन्म के समय दिए गए सेक्स का मतलब** है पुरुष या महिला की पहचान जो डॉक्टर शिशुओं को जननांग के आधार पर देते हैं और उनके जन्म के रिकॉर्ड पर लिखी होती है।

[16] डेविस, जी. (2017). इंटरसेक्स एंड सोशल कंस्ट्रक्शन ऑफ़ सेक्स. जेंडर एंड सोसाइटी, 31(3), 336–360. https://doi.org/10.1177/0891243217696229

[17] फॉस्टो-स्टर्लिंग, ए. (2000). सेक्सिंग द बॉडी: जेंडर पॉलिटिक्स एंड द कंस्ट्रक्शन ऑफ़ सेक्शुएलिटी. न्यूयॉर्क, NY: बेसिक बुक्स।

[18] टिमस्ट्रा, जेफरी डी., और पामेला श्वेडर. 2023. “एम्ब्रियोलॉजी, सेक्सुअल डेवलपमेंट.” स्टैटपर्ल्स में. ट्रेजर आइलैंड, FL: स्टैटपर्ल्स पब्लिशिंग. https://www.ncbi.nlm.nih.gov/books/NBK557601/.

[19] पर्सनल जेनेटिक्स एजुकेशन प्रोजेक्ट (pgEd). 2024. सेक्स, जेंडर और जेनेटिक्स. बोस्टन, MA: हार्वर्ड मेडिकल स्कूल. https://pged.org/wp-content/uploads/2024/08/IB_Sex-Gender-Genetics.pdf.

[20] इबिडेम (उसी स्रोत और पृष्ठ से लिया गया)

[21] **मिसॉजनी** का मतलब है महिलाओं से नफ़रत, उनके प्रति घृणा या पूर्वाग्रह। यह नज़रिया, व्यवहार और संस्थाओं के तरीकों में दिखता है जो महिलाओं को उनके जेंडर की वजह से कम आंकते हैं, उन्हें चीज़ समझते हैं या उन्हें अलग कर देते हैं।

[22] **ट्रांसमिसॉजनी** भेदभाव और दुश्मनी का एक अनोखा तरीका है जो खास तौर पर ट्रांसजेंडर महिलाओं और ट्रांसफेमिनिन लोगों के साथ होता है। यह ट्रांसफोबिया (ट्रांस लोगों के खिलाफ पूर्वाग्रह) को स्त्री द्वेष (महिलाओं के खिलाफ पूर्वाग्रह) के साथ जोड़ता है, जिससे हाशियाकरण, हिंसा और सामाजिक बहिष्कार के अलग-अलग पैटर्न बनते हैं।

जवाबी ढांचा (काउंटर-फ़्रेम):

- **एक महिला होने का क्या मतलब है, इसके बारे में समाज के विचार केवल जीव विज्ञान पर आधारित नहीं हैं। वे हमारी परवरिश और सामाजिक अपेक्षाओं से भी आकार लेते हैं।**

- **महिलाओं की रक्षा करने का अर्थ है इंटरसेक्स और गैर-बाइनरी लोगों के साथ-साथ सभी महिलाओं - सिस[23] और ट्रांस - की रक्षा करना।**

- **नारीवाद हमेशा पितृसत्ता के निकायों को चुनौती देने के बारे में रहा है। अधिकारों को 'जन्म के समय निर्धारित सेक्स' तक सीमित करना उसी तर्क को दोहराता है जिसे नारीवाद खत्म करना चाहता था।**

पैरवी के लिए नोट:

इस ढांचे (फ़्रेम) का उपयोग तब करें जब नीतियाँ या अभियान ट्रांस लोगों को बाहर करने के लिए "महिला" की परिभाषा को सीमित करने का प्रयास करते हैं। दिखाएं कि समावेशी अधिकार ढांचे ज़्यादा मज़बूत हैं क्योंकि वे पितृसत्ता कैसे काम करती है, इसके पूर्ण स्पेक्ट्रम को संबोधित करते हैं और सभी महिलाओं के लिए अधिक अधिकारों की अनुमति देते हैं।

[23] **सिस या सिसजेंडर** का उपयोग किसी ऐसे व्यक्ति को निरूपित करने के लिए किया जाता है जिसकी व्यक्तिगत पहचान की भावना जन्म के समय उन्हें सौंपे गए जेंडर से मेल खाती है।

2. “सुरक्षा” का तर्क”

“महिलाओं के स्थानों में ट्रांस महिलाओं को अनुमति देने से महिलाओं को खतरा होता है।“

इसके पीछे के दावे:

- महिलाओं (केवल जन्म-निर्धारित सेक्स द्वारा परिभाषित) को विशिष्ट रूप से और लगातार पुरुषों से जोखिम होता है।
- ट्रांस महिलाओं (जिन्हें गलत तरीके से ‘पुरुष’ समझा जाता है जो खुद को महिला मानती हैं) को लड़कों / पुरुषों की तरह पाला गया है और परिणामस्वरूप, उन्होंने महिलाओं पर हिंसा और हक को अपने अंदर समा लिया है।
- ट्रांस महिलाओं की (जिन्हें गलती से ‘पुरुष’ समझ लिया जाता है, जो खुद को महिला मानती हैं) महिलाओं के लिए बनाए गए निजी एकल-सेक्स स्थानों और गतिविधियों तक पहुँच बढ़ रही है, जिसमें महिलाओं के घरेलू दुर्व्यवहार आश्रयों से लेकर काम की जगह पर महिलाओं के स्नानघर (शॉवर) तक शामिल हैं, जहाँ उन्हें खतरे के तौर पर देखा जाता है।
- महिला स्थान और सेवाएं खतरे में हैं और कई मामलों में, पुरुषों के अधिकार समूहों और ट्रांसजेंडर कार्यकर्ताओं के संयुक्त दबाव के कारण उन्हें खत्म किया जा चुका है या किया जा रहा है।
- ट्रांस महिलाओं को शामिल करने से (सिस) महिलाओं (जिनके साथ अक्सर पुरुष घरेलू पार्टनरों द्वारा दुर्व्यवहार किया जाता है) में असुरक्षा की भावना पैदा होती है।
- महिलाओं की जगहों पर सख्ती से पुलिस की निगरानी होनी चाहिए ताकि वे “सुरक्षित” रहें। महिलाओं की सुरक्षा और गोपनीयता एकल-सेक्स स्थानों (शौचालय, चेंजिंग रूम, शरणार्थियों, जेलों) पर निर्भर करती है।
- सेक्स की जैविक वास्तविकता को खत्म करने के प्रयास महिलाओं को उनकी गरिमा, सुरक्षा और कल्याण से वंचित करके उन पर मौलिक रूप से हमला करते हैं।
- ट्रांस-समावेशी एक्टिविज़्म अक्सर पुरुषों के अधिकारों के लिए एक्टिविज़्म का एक छिपा हुआ रूप हो सकता है।

यह तर्क क्यों सही लगता है:

- वे नैतिक आतंक [24] की भावना को आकर्षित करते हैं।
- सुरक्षा एक शक्तिशाली भावनात्मक ढांचा है, खासकर स्नानघर और आश्रयों जैसे स्थानों के आसपास।
- यह यौन हिंसा के डर को बढ़ावा देता है। यह जेंडर आधारित हिंसा के वास्तविक भय का लाभ उठाता है, उन्हें ट्रांस महिलाओं की ओर मोड़ देता है।
- मीडिया की रूढ़ियाँ (स्टीरियोटाइप्स) ट्रांस महिलाओं को भेष बदले हुए शिकारी के रूप में दिखाती हैं।

---

[24] **नैतिक आतंक**, डर या चिंता की एक व्यापक भावना है कि कुछ समूह, व्यवहार या मुद्दा समाज के मूल्यों या सुरक्षा को खतरा पहुँचाते हैं - भले ही वास्तविक खतरा बढ़ाया-चढ़ाया गया हो या वो असली न हो।

मिथक को दूर करना (डिबंकिंग):

कोई सबूत दावे का समर्थन नहीं करता है।

- ऐसा कोई डेटा नहीं है जो इस बात का समर्थन करता हो कि ट्रांसजेंडर महिलाओं के दूसरों के मुकाबले हिंसा करने की संभावना अधिक होती है। ये धारणाएं गुमराह करने वाली और भेदभावपूर्ण हैं।
- डेटा से यह भी पता चलता है कि सामान्य रूप से ट्रांस महिलाओं और ट्रांस लोगों को स्वयं हिंसा का सामना करने का अत्यधिक जोखिम होता है। सिसजेंडर लोगों की तुलना में, ट्रांसजेंडर लोगों को बलात्कार, यौन उत्पीड़न और गंभीर या साधारण हमले सहित हिंसक उत्पीड़न का अनुभव करने की संभावना चार गुना अधिक होती है। [25]
- महिलाओं के स्थानों में कौन प्रवेश करता है, इस पर संकीर्ण रूप से ध्यान केंद्रित करके, ढांचा संरचनात्मक जेंडर-आधारित हिंसा को चुनौती देने के बजाय खतरे को (उदाहरण के लिए, "ट्रांस महिलाओं को खतरे के रूप में") **व्यक्तिपरक बनाता है।**
- यह जेंडर पर आधारित हिंसा (पितृसत्ता, स्त्री द्वेष, सरकार द्वारा उत्तरजीवियों (सर्वाइवरों) की उपेक्षा) और पर्याप्त कानूनी सुरक्षा और सहारे की कमी के असली कारणों को संबोधित करने के बजाय, सिसजेंडर महिलाओं को कमज़ोर और बहिष्कार वाले नियमों की ज़रूरत वाली स्थिति में रखता है।

बहिष्करण से नुकसान बढ़ता है।

- जिन ट्रांस लोगों को जेंडर-उपयुक्त सुविधाओं से वंचित किया जाता है, उन्हें हमले और उत्पीड़न के काफी अधिक जोखिमों का सामना करना पड़ता है।[26]
- आश्रयों से बहिष्करण ट्रांस महिलाओं को बेघर होने और यौन हिंसा के बढ़ते जोखिम में डालता है।[27]

[25]फ्लोरेस, ए. आर., मेयर, आई. एच., लैंगटन, एल., और रोमेरो, ए. पी. (2022). ट्रांसजेंडर लोगों के हिंसक अपराध का शिकार होने की संभावना सिसजेंडर लोगों की तुलना में चार गुना ज़्यादा होती है। विलियम्स इंस्टीट्यूट, UCLA स्कूल ऑफ़ लॉ।

[26]मर्चिसन, जी. आर., एजेनोर, एम., रीसनर, एस. एल., और वॉटसन, आर. जे. (2019). स्कूल रेस्टरूम एंड लॉकर रूम रिस्ट्रिक्शंस एंड सेक्शुअल असॉल्ट रिस्क अमंग ट्रांसजेंडर यूथ.पीडियाट्रिक्स, 143(6), e20182902.; हरमन, जे. एल., और फ्लोरेस, ए. आर. (2025). पब्लिक टॉयलेट और दूसरी जेंडर वाली जगहों पर सेफ्टी और प्राइवेसी। विलियम्स इंस्टीट्यूट, UCLA स्कूल ऑफ लॉ।

[27]लोगी, सी. एच., और अन्य. (2016). एक्सपीरियंसेस ऑफ़ ट्रांस वूमेन एंड टू-स्पिरिट पर्सन्स एक्सेसिंग वूमेन-स्पेसेफिक हेल्थ एंड हाउसिंग सर्विसेज. वुमन्स हेल्थ इश्यूज, 26(6), 640-647.

जवाबी ढांचा (काउंटर-फ़्रेम):

- अंतरंग साथी (इंटिमेट पार्टनर) और महिलाओं के खिलाफ यौन हिंसा अधिकतर सिस पुरुषों की तरफ से होती है, ट्रांस महिलाओं की तरफ से नहीं।[28] वास्तविक सुरक्षा स्त्री जाति से द्वेष और उन प्रणालियों को संबोधित करने से आती है जो जेंडर पर आधारित हिंसा को बढ़ावा देते हैं, न कि ट्रांस लोगों को बलि का बकरा बनाने से।

- महिलाओं की रक्षा करने का अर्थ है इंटरसेक्स और गैर-बाइनरी लोगों के साथ-साथ सभी महिलाओं - सिस और ट्रांस - की रक्षा करना। हर कोई सुरक्षा का हकदार है। इस बात के कोई सबूत नहीं हैं कि ट्रांस महिलाओं को शामिल करने से महिलाओं को कम सुरक्षित बनाया जाता है - लेकिन बहुत सारे सबूत हैं कि उन्हें बाहर करने से ट्रांस महिलाएं अधिक जोखिम में हो जाती हैं और समग्र रूप से महिलाओं के लिए सुरक्षा में वृद्धि नहीं होती है।

पैरवी के लिए नोट:
हिंसा के बारे में सही चिंताओं को हमेशा सही ठहराएं, लेकिन सबूतों पर ध्यान दें: असली मुद्दा जेंडर पर आधारित हिंसा है, ट्रांस लोगों को शामिल करना नहीं। इस बात पर ज़ोर देकर एकजुटता बनाएं कि सभी महिलाओं को — ट्रांस और इंटरसेक्स महिलाओं सहित — जेंडर पर आधारित हिंसा का सामना करने के लिए समाधान की ज़रूरत है और सभी के लिए सुरक्षा और बचाव बढ़ाने वाले ठोस समाधानों के लिए मिलकर पैरवी करें।

---

[28]वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइज़ेशन. (2021). महिलाओं के खिलाफ़ हिंसा के अनुमान, 2018.

3. “खेल में निष्पक्षता” का तर्क

“ट्रांस महिलाओं को, महिलाओं के खेल में अनुचित लाभ मिलता है। उनका लाभ महिलाओं और लड़कियों की खेलों में निष्पक्ष रूप से शामिल होने की क्षमता को प्रभावित करता है।“

इसके पीछे के दावे:

- सेक्स से जुड़े शारीरिक मतभेदों के कारण, ट्रांस महिलाओं को महिला खेल श्रेणियों में “अनुचित लाभ” मिलता है।
- ट्रांस महिला एथलीट अपने शारीरिक लाभ के परिणाम स्वरूप महिला खेल आयोजनों में हावी हो रही हैं।
- ट्रांस महिलाओं के लाभ और समावेशन के परिणाम स्वरूप कई (सिस) महिलाओं को उच्च स्तरीय खेल में उपलब्धि और ओलंपिक सफलता पाने के अपने सपनों को छोड़ना पड़ा है / पड़ेगा।
- महिला श्रेणियों में ट्रांस महिलाओं को शामिल करने से (सिस) महिलाओं को उनके ट्रांसजेंडर विरोधियों की ‘असामान्य’ ताकत से दबने और घायल होने के बढ़ते जोखिम का सामना करना पड़ता है।
- कुछ पुरुष अधिकार समूह सक्रिय रूप से अपने सदस्यों को ट्रांसजेंडर महिलाओं के रूप में पहचान बनाने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं, जिसका स्पष्ट उद्देश्य जेंडर आधारित असमानताओं को छिपाकर और किसी भी सकारात्मक कार्यवाही के उपायों को बाधित करके नारीवाद को कमज़ोर करना है।

यह तर्क क्यों सही लगता है:

- यह जेंडर न्याय / समानता, निष्पक्षता और प्रतिस्पर्धा के मूल्यों को आकर्षित करता है।
- यह महिलाओं की जन्मजात शारीरिक ‘कमज़ोरी’ या नुकसान की कल्पनाओं को आकर्षित करता है।
- महिलाओं और लड़कियों को “अवसरों को खोने” के रूप में दर्शाता है।
- यह उन खेलों में असमानताओं का संदर्भ देता है जिनसे महिला एथलीट लगातार लड़ रही हैं।
- यह समावेशन को नारीवाद-विरोधी पैरोकारों की रणनीति के रूप में प्रस्तुत करता है।

मिथक को दूर करना (डिबंकिंग):

असलियत काफी अलग है

- महिलाओं और लड़कियों को खेलों में महत्वपूर्ण बाधाओं का सामना करना पड़ता है जिनका ट्रांसजेंडर समावेशन से कोई लेना-देना नहीं है: अधिकांश लड़कियों और महिलाओं को उनकी यौनिकता, गतिशीलता और शारीरिक स्वायत्तता पर नियंत्रण के कारण खेलों में भाग लेने से रोका जाता है।
- ट्रांसजेंडर और इंटरसेक्स महिलाओं और लड़कियों को सभी स्तरों पर खेलों में कम प्रतिनिधित्व दिया जाता है। किसी भी ट्रांसजेंडर महिला ने महिलाओं की स्पर्धाओं में ओलंपिक पदक नहीं जीता है।
- खेल में नकारात्मक अनुभवों की रिपोर्ट करने वाले व्यक्तियों में ट्रांस महिलाओं का उच्चतम प्रतिशत पाया गया है, जिसमें मौखिक धमकियों, शारीरिक हिंसा, साइबरबुलिंग और उनकी जेंडर पहचान के आधार पर भेदभाव शामिल हैं।[30]

खेल पहले से ही मतभेदों को नियंत्रित करते हैं।

- सभी एथलीटों के लिए प्रतिस्पर्धी खेलों में भागीदारी प्रोटोकॉल का पालन करना आवश्यक है। ट्रांसजेंडर एथलीट समावेशन पर आईओसी (IOC's) की गाइडलाइंस में कहा गया है किसी व्यक्ति के जन्म के समय दिए गए सेक्स या अंदरूनी सेक्स विशेषताओं के आधार पर "कोई अनुमानित लाभ" नहीं होना चाहिए। इन मानकों को खेल विज्ञान, चिकित्सा और मानवाधिकार कानून के क्षेत्र के विशेषज्ञों के साथ साझेदारी में तैयार किया गया था।[31]
- अंतरराष्ट्रीय खेल महासंघों का महिलाओं के शरीर पर पुलिसिंग और आक्रामक परीक्षण प्रथाओं का एक ट्रैक रिकॉर्ड है, विशेष रूप से 'अनुचित शारीरिक लाभ'[32] की तलाश में काले और भूरे रंग के शरीर[33] को लक्षित करना।
- ट्रांस और इंटरसेक्स महिलाओं को खेल से श्रेणीगत या पूरी तरह से बाहर रखना (ब्लैंकेट एक्सक्लूशन) (जिसमें उन्हें केवल ट्रांस या इंटरसेक्स श्रेणियों में रखना शामिल है) भेदभाव से मुक्त होकर जीने के उनके मानव अधिकार का प्रत्यक्ष रूप से उल्लंघन है।[34]

सिस एथलीटों के बीच जैविक विविधता मौजूद है।

- प्राकृतिक शरीर विविधता खेल का एक ज़रूरी हिस्सा है; लड़कियों और महिलाओं के शरीर की पुलिसिंग अधिक रूढ़िवादिता और भेदभाव की ओर ले जाती है।
- ऊंचाई, फेफड़ों की क्षमता और टेस्टोस्टेरोन में अंतर स्वाभाविक रूप से होता है और अक्सर एथलीटों को एक फायदा देता है।
- **इमाने खलीफ** और **कैस्टर सेमेन्या**[34], दोनों सिसजेंडर महिलाओं के मामले, जिन्हें स्वाभाविक रूप से उच्च टेस्टोस्टेरोन के स्तर के कारण प्रतिस्पर्धा से प्रतिबंधित कर दिया गया था, इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि कैसे "जेंडर परीक्षण" व्यापक रूप से महिलाओं को नुकसान पहुँचाता है।

---

[29] **शारीरिक स्वायत्तता** अपने स्वयं के शरीर पर नियंत्रण रखने – अपने के स्वास्थ्य, यौनिकता और प्रजनन के बारे में जबरदस्ती, हिंसा या बाहरी नियंत्रण के बिना, स्वतंत्र और जानकारी अधारित निर्णय लेने - का मौलिक मानव अधिकार है। शारीरिक स्वायत्तता जेंडर समानता की नींव है - जिसमें स्वास्थ्य का अधिकार और हिंसा से मुक्त रहने का अधिकार शामिल है।

[30] शर्मा, ए., और अन्य ए. (2024). सोसिएटल डिस्क्रिमिनेशन एंड मेंटल हेल्थ अमंग ट्रांसजेंडर एथलीट्स: ए सिस्टेमेटिक रिव्यू एंड मेटा-एनालिसिस. BMC साइकोलॉजी, 12, आर्टिकल 33.; जोन्स, बी. ए., आर्सेलस, जे., बौमन, डब्ल्यू. पी., और हेक्राफ्ट, ई. (2017). स्पोर्ट्स एंड ट्रांसजेंडर पीपल: ए सिस्टेमेटिक रिव्यू ऑफ़ द लिटरेचर रिलेटिंग टू स्पोर्ट पार्टिसिपेशन एंड कॉम्पेटिटिव स्पोर्ट पॉलिसीज़. स्पोर्ट्स मेडिसिन, 47(4), 701-716.

[31] https://glaad.org/fact-sheet-for-reporters-transgender-participation-in-sports/ https://www.theswaddle.com/black-and-brown-women-athletes-are-overwhelmingly-more-likely-to-have-their-sex-challenged-says-human-rights-watch

[32] https://www.hrw.org/news/2020/12/04/interview-cut-down-cusp-glory

[33] https://www.theswaddle.com/black-and-brown-women-athletes-are-overwhelmingly-more-likely-to-have-their-sex-challenged-says-human-rights-watch

[34] https://www.pbs.org/newshour/world/for-women-athletes-of-color-outsized-scrutiny-over-gender-is-nothing-new-historians-say

[35] UN ऑफिस ऑफ़ द हाई कमिश्नर फॉर ह्यूमन राइट्स। "UN एक्सपर्ट्स ने देशों से अपील की है कि वे LGBT और इंटरसेक्स लोगों को शामिल करने वाले खेल के आदर्श को बनाए रखें।" प्रेस रिलीज़, 31 अक्टूबर, 2023. https://www.ohchrorg/en/press-releases/2023/10/un-experts-urge-states-uphold-ideal-sport-inclusive-lgbt-and-intersex.

जवाबी ढांचा (काउंटर-फ़्रेम):

- महिलाओं और लड़कियों को खेलों में महत्वपूर्ण बाधाओं का सामना करना पड़ता है जिनका ट्रांसजेंडर समावेशन से कोई लेना-देना नहीं है: अधिकांश लड़कियों और महिलाओं को उनकी यौनिकता, गतिशीलता और शारीरिक स्वायत्तता पर नियंत्रण के कारण खेलों में भाग लेने से रोका जाता है।
- निष्पक्षता और समावेशन एक दूसरे के विपरीत नहीं हैं; ट्रांस और / या इंटरसेक्स महिलाओं और लड़कियों को शामिल करते हुए खेल सुरक्षित और निष्पक्ष हो सकते हैं।
- खेल पहले से ही मतभेदों का प्रबंधन करते हैं - ट्रांस एथलीटों पर व्यापक प्रतिबंध राजनीति के बारे में है, निष्पक्षता के बारे में नहीं।
- यह निर्धारित करने के लिए कि "वास्तव में" महिलाओं के स्थानों में कौन है, निकायों की बढ़ी हुई पुलिसिंग से उन महिलाओं को खतरा होता है जो जेंडर के मानदंडों में फिट नहीं बैठतीं (बुच लेस्बियन, अश्वेत रंग की महिलाएं, विकलांग महिलाएं, आदि) हैं और इससे आक्रामक निगरानी (उदाहरण के लिए, आईडी, चिकित्सा इतिहास या रूप-रंग की जांच) भी फिर से वापस आ जाती है।

पैरवी के लिए नोट:
समावेशन पर ज़ोर देने के लिए "निष्पक्षता" को फिर से परिभाषित करें: निष्पक्षता लोगों को बाहर करने के बारे में नहीं है - यह सभी को खेलने का मौका देने के बारे में है। केवल कुलीन खेलों (एलीट स्पोर्ट्स) के भीतर ही नहीं, बल्कि सभी युवा विकास पर प्रतिबंधों के नुकसान पर प्रकाश डालें।

4. “अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता” का तर्क”

“अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता जैविक तथ्यों को बताना, सुरक्षित बनाती है। “

इसके पीछे के दावे:

- जैविक सेक्स वास्तविक, प्राकृतिक और स्थिर है। विज्ञान वस्तुनिष्ठ है, और जैविक तथ्य भी।
- अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता जानकारी और विचारों की खोज, उसे प्राप्त करने और प्रदान करने की अनुमति देती है, यहाँ तक कि वो भी जो कुछ लोगों के लिए अलोकप्रिय या विवादास्पद हैं।
- अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एक लोकतांत्रिक समाज की आवश्यक नींव में से एक है।
- ‘जेंडर-आलोचनात्मक’ नारीवादी एक चल रहे ‘नारी-विरोधी धर्मयुद्ध’ की शिकार हैं जो महिलाओं को अदृश्य बनाने का प्रयास करता है।
- ‘जेंडर-आलोचनात्मक नारीवादियों’ को स्वतंत्र रूप से बोलने के अधिकार से वंचित किया जा रहा है; यह महिलाओं के खिलाफ हिंसा है।

यह तर्क क्यों सही लगता है:

- यह खुली बहस के उदार मूल्यों को आकर्षित करता है।
- केवल-ट्रांस (ट्रांस-एक्सक्लूसिव) पैरोकारों को सेंसरशिप का शिकार बताता है।
- “सामान्य ज्ञान”, विज्ञान प्राधिकरण और निष्पक्षता को आकर्षित करता है।

---

[36] **जेंडर-आलोचनात्मक नारीवादियों** का कहना है कि जैविक सेक्स एक मौलिक और अपरिवर्तनीय विशेषता है जो जेंडर पहचान से अलग है और जेंडर पहचान और जेंडर आत्म-पहचान की अवधारणाओं को जेंडर भूमिकाओं से जुड़ी अंदरूनी तौर पर दबाने वाली चीज़ें मानते हैं।

मिथक को दूर करना (डिबंकिंग):

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का मतलब जवाबदेही से मुक्ति नहीं है।

- **रबात प्लान ऑफ एक्शन**[37] जैसे अंतर्राष्ट्रीय मानक स्पष्ट करते हैं कि नफरत या भेदभाव को भड़काने वाला भाषण अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत संरक्षित नहीं है।
- कार्यस्थलों, स्कूलों या सेवा प्रावधान में उत्पीड़न और भेदभाव संरक्षित नहीं है।

'जेंडर-आलोचनात्मक' बयानबाजी के भौतिक परिणाम होते हैं।

- रिसर्च के अनुसार, ट्रांस विरोधी बयानबाजी ट्रांस लोगों के खिलाफ़ उच्च स्तर के उत्पीड़न और घृणा अपराधों से जुड़ी है।[38]
- "जेंडर-आलोचनात्मक" भाषण अक्सर राय से आगे बढ़कर बहिष्करण कानूनों के लिए सक्रिय पैरवी में बदल जाती है, जैसे कि यूनाइटेड किंगडम — सुप्रीम कोर्ट ने फॉर विमेन स्कॉटलैंड लिमिटेड बनाम द स्कॉटिश मिनिस्टर्स (2025) में एकमत से फैसला सुनाया कि समानता अधिनियम 2010 के तहत, "पुरुष," "महिला," और "सेक्स" शब्दों को जेंडर पहचान के बजाय जैविक सेक्स के तौर पर लिया जाना चाहिए। इसका मतलब है कि जेंडर पहचान प्रमाण पत्र वाली ट्रांस महिलाओं को भी अब उस कानून के मकसद के लिए कानूनी तौर पर "महिला" नहीं माना जाता है, जिसमें एकल-सेक्स स्थान, खेल, आश्रय आदि शामिल हैं।[39]

"जैविक सेक्स" सरल विषय नहीं है।

- वैज्ञानिक प्रमाण दर्शाते हैं कि सेक्स विशेषताएं एक स्पेक्ट्रम पर मौजूद हैं, जो शारीरिक, हार्मोनल और गुणसूत्र विविधता की एक विस्तृत श्रृंखला को दर्शाती हैं।[40]
- इंटरसेक्स लोग अनुमानित जनसंख्या 1.7% हिस्सा हैं, जो दर्शाता है कि कठोर सेक्स द्विआधारिता (बायनेरीज़) मानव विविधता को दर्शाने में विफल रहती है।[41]
- जन्म के समय सेक्स निर्धारित करना[42] एक सामाजिक प्रक्रिया है, न कि एक निश्चित जैविक सत्य।[43] [44] [45] [46] सेक्स को जन्म के समय बाहरी जननांग के आधार पर तय किया जाता है, आनुवंशिकी (जेनेटिक्स) के आधार पर नहीं। बाहरी जननांग की जांच जन्म के बाद सेक्स निर्धारित करने का सबसे सरल तरीका है, लेकिन आनुवंशिक (जेनेटिक) मूल्यांकन की तुलना में कम विश्वसनीय है। बाहरी जननांग में भिन्नता होने की संभावना बहुत ज़्यादा होती है।[47]

---

[37]संयुक्त राष्ट्र मानव अधिकार परिषद, ए/एचआरसी/22/17/Add.4, संयुक्त राष्ट्र मानव अधिकार उच्चायुक्त की वार्षिक रिपोर्ट: परिशिष्ट, राष्ट्रीय, नस्लीय या धार्मिक घृणा के लिए उकसाने के निषेध पर विशेषज्ञ कार्यशालाओं पर संयुक्त राष्ट्र मानव अधिकार उच्चायुक्त की रिपोर्ट (11 जनवरी 2013) https://www.ohchr.org/sites/default/files/Rabat_draft_outcome.pdf

[38]ओफिर, वाई. (2024). " LGBTQ+ विरोधी बयानबाजी कैसे हिंसा को बढ़ावा देती है," साइंटिफिक अमेरिकन (3 जून, 2024).

[39]ज़्यादा जानकारी के लिए - An interim update on the practical implications of the UK Supreme Court judgment | EHRC देखें.

[40]रहमान-सटर, सी., केसलर, टी. एम., शूरमान, जे., और ज़ेहंडर, पी. (2023). इज़ क्स स्टिल बाइनरी? डॉयचेस अर्ज़ेब्लैट इंटरनेशनल, 120(13), 216–222. https://doi.org/10.3238/arztebl.m2023.0084

[41]ब्लैकलेस, एम., चारुवस्त्र, ए., डेरिक, ए., फॉस्टो-स्टर्लिंग, ए., लॉज़ेन, के., और ली, ई. (2000). हाऊ सेक्सुअली डाइमॉर्फिक आर वी? रिव्यू एंड सिंथेसिस. अमेरिकन जर्नल ऑफ़ ह्यूमन बायोलॉजी, 12(2), 151-166.

[42]**जन्म के समय दिए गए सेक्स का मतलब** है पुरुष या महिला की पहचान जो डॉक्टर शिशुओं को जननांग के आधार पर देते हैं और उनके जन्म के रिकॉर्ड पर लिखी होती है।

[43]डेविस, जी. (2017). इंटरसेक्स एंड सोशल कंस्ट्रक्शन ऑफ़ सेक्स. जेंडर एंड सोसाइटी, 31(3), 336–360. https://doi.org/10.1177/0891243217696229

[44]फॉस्टो-स्टर्लिंग, ए. (2000). सेक्सिंग द बॉडी: जेंडर पॉलिटिक्स एंड द कंस्ट्रक्शन ऑफ़ सेक्शुएलिटी. न्यूयॉर्क, NY: बेसिक बुक्स।

[45]टिमस्ट्रा, जेफरी डी., और पामेला श्वेडर. 2023. "एम्ब्रियोलॉजी, सेक्शुअल डेवलपमेंट." स्टैटपर्ल्स में. ट्रेजर आइलैंड, FL: स्टैटपर्ल्स पब्लिशिंग. https://www.ncbi.nlm.nih.gov/books/NBK557601/.

[46]पर्सनल जेनेटिक्स एजुकेशन प्रोजेक्ट (pgEd). 2024. सेक्स, जेंडर और जेनेटिक्स. बोस्टन, MA: हार्वर्ड मेडिकल स्कूल. https://pged.org/wp-content/uploads/2024/08/IB_Sex-Gender-Genetics.pdf.

[47]इबिडेम (उसी स्रोत और पृष्ठ से लिया गया)

जवाबी ढांचा (काउंटर-फ़्रेम):

- हर किसी को अपनी राय रखने का अधिकार है। लेकिन जब भाषण - उत्पीड़न और अभद्र भाषा में बदल जाता है या बहिष्करण नीतियों को सही ठहराने के लिए उपयोग किया जाता है - तो वह नुकसान न पहुँचाने वाला नहीं रह जाता।

- हानिकारक भाषण की आलोचना करना सेंसरशिप नहीं है - यह जवाबदेही है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में यह इंगित करने की स्वतंत्रता शामिल है कि बहिष्करण विशिष्ट लोगों को कैसे नुकसान पहुँचाता है।

5. “नारीवादी विरासत” का तर्क”

“नारीवाद हमेशा सेक्स-आधारित अधिकारों के बारे में रहा है।“

इसके पीछे के दावे:

- नारीवादी आंदोलन ने ऐतिहासिक रूप से महिलाओं को उनके जीव विज्ञान के आधार पर उत्पीड़ित यौन वर्ग के रूप में परिभाषित किया।
    - महिलाओं का उत्पीड़न ऐतिहासिक रूप से जैविक सेक्स मतभेदों (जैसे, प्रजनन भूमिकाओं, पुरुष हिंसा के प्रति दुर्बलता) में निहित रहा है।
    - प्रजनन अधिकार, यौन उत्पीड़न के खिलाफ सुरक्षा, और केवल महिलाओं के लिए स्थान जैसे लाभ सेक्स के आधार पर संगठित करके जीते गए, न कि जेंडर पहचान के आधार पर।
- समकालीन जेंडर राजनीति “महिला” श्रेणी को मिटाने का जोखिम उठा रही है, जो दशकों के नारीवादी काम को कमज़ोर कर रही है, जिसने महिलाओं को पितृसत्ता के तहत उत्पीड़ित सेक्स वर्ग के रूप में परिभाषित किया है।

यह तर्क क्यों सही लगता है:

- प्रारंभिक और दूसरी लहर के नारीवादियों ने अक्सर महिलाओं को जीव विज्ञान के आधार पर उत्पीड़ित सेक्स वर्ग के रूप में परिभाषित किया।
- महिलाओं को उनकी अपनी ज़रूरतों के साथ एक अलग सेक्स समूह के रूप में मान्यता देकर, हम मातृत्व अवकाश, समापन तक पहुँच और कार्यस्थल उत्पीड़न के खिलाफ सुरक्षा जैसे अधिकार प्राप्त करने में सक्षम हुए।
- मातृत्व अवकाश, गर्भ समापन की पहुँच, और कार्यस्थल उत्पीड़न के खिलाफ सुरक्षा जैसे अधिकार - सभी को महिलाओं को अलग-अलग ज़रूरतों के साथ एक सेक्स वर्ग के रूप में नामित करके प्राप्त किया गया था।

---

[48]एक सेक्स वर्ग के रूप में महिलाएं इस विचार को संदर्भित करती हैं कि महिलाएं, एक सामाजिक समूह के रूप में, समाज में पुरुषों के प्रति अधीनता की एक सामान्य स्थिति साझा करती हैं, जो जैविक सेक्स में निहित हैं लेकिन सत्ता (पॉवर), श्रम और सामाजिक संगठन की प्रणालियों के माध्यम से बनाए रखी जाती हैं। यह महिलाओं को न केवल व्यक्तियों के रूप में बल्कि एक सामूहिक समूह के रूप में भी तैयार करता है जिसका उत्पीड़न संरचनात्मक है।

मिथक को दूर करना (डिबंकिंग):

नारीवादी विश्लेषण ट्रांस समावेशन की पुष्टि करता है।

- पितृसत्ता उत्पीड़न के एक उपकरण के रूप में द्विआधारी (बाइनरी) जेंडर भूमिकाओं को लागू करती है और उन लोगों को दंडित करती है जो उनके अनुरूप नहीं हैं। ट्रांस समावेशन इन संरचनाओं को खत्म करने के नारीवाद के लक्ष्य के साथ तालमेल में है।
- नारीवादी सिद्धांत ने लंबे समय से "महिला" के अनिवार्यतावादी (एसेंशियलिस्ट) विचारों को चुनौती दी है। ट्रांस महिलाओं का बहिष्कार इस बौद्धिक परंपरा के अनुरूप नहीं है।
- शारीरिक स्वायत्तता - एक मुख्य नारीवादी मांग है, जिसमें संक्रमण (ट्रांज़िशन) का अधिकार, स्वास्थ्य देखभाल तक पहुँच, और जेंडर पहचान खुद तय करने के अधिकार शामिल हैं।
- नारीवाद स्त्रीत्व / मर्दानगी के कठोर मानदंडों की आलोचना करता है। ट्रांस लोगों का समर्थन करना जेंडर मानदंडों और भूमिकाओं की तरलता (फ्लूइडटी) की पुष्टि करता है।

पितृसत्ता, ढांचे से बाहर रखी गई जनसंख्या को नुकसान पहुँचाती है, जिसमें जेंडर विविध जनसंख्या भी शामिल है।

- यह नारीवाद वर्चस्व और उत्पीड़न की सभी प्रणालियों को समाप्त करना चाहता है।
- ट्रांस महिलाओं के हिंसा, गरीबी और उत्पीड़न के अनुभव पितृसत्तात्मक प्रणालियों से गहराई से जुड़े हुए हैं।
- सिस और ट्रांस महिलाओं को विभाजित करने से पितृसत्ता को लाभ होता है, नारीवाद को नहीं। पहचानों में एकता नारीवादी संघर्षों को मज़बूत बनाती है, कमज़ोर नहीं।

जवाबी ढांचा (काउंटर-फ़्रेम):

- ट्रांस-समावेशी नारीवाद कोई अतिरिक्त बात नहीं है - यह नारीवाद की सबसे गहरी प्रतिबद्धताओं - प्रतिबंध के बजाय मुक्ति, विभाजन के बजाय एकजुटता और भय के बजाय न्याय - को आगे बढ़ाता है।

- नारीवाद उन प्रणालियों को खत्म करने के बारे में है जो महिलाओं और संरचनात्मक रूप से हाशिए पर रहने वाले लोगों को नुकसान पहुँचाती हैं। इतिहास से पता चलता है कि बहिष्करण हमें कमज़ोर करता है - समावेशन हमें मज़बूत बनाता है।

पैरवी के लिए नोट:
ट्रांस समावेशन को नारीवादी इतिहास की निरंतरता के रूप में रखें - विश्वासघात रूप में नहीं। पिछले बहिष्करण (जाति, यौनिकता, विकलांगता) के उदाहरणों का उपयोग यह दिखाने के लिए करें कि समावेशन कैसे हमेशा नारीवाद को मज़बूत बनाता है।

6. “लेस्बियन को मिटाने” का तर्क

“ट्रांस-समावेशिता लेस्बियनों के अधिकारों को नष्ट कर रही है।“

इसके पीछे के दावे:

- ट्रांस महिलाओं को महिलाओं के रूप में मान्यता देने से लेस्बियन पहचान और दृश्यता (विजिबिलिटी) के लिए अनपेक्षित परिणाम होते हैं।
- मीडिया प्रतिनिधित्व “LGBTQ” संदर्भों में अधिकाधिक ट्रांस महिलाओं को उजागर करता है जबकि लेस्बियन-विशिष्ट मुद्दों पर कम ध्यान दिया जाता है।
- लेस्बियनों पर ट्रांस महिलाओं को संभावित साथी के रूप में स्वीकार करने के लिए दबाव डाला जा रहा है। अगर लेस्बियन ट्रांस महिलाओं को डेट नहीं करना चाहती हैं तो उनपर ट्रांसफोबिया का आरोप लगाया जा रहा है।
- केवल महिलाओं या केवल-लेस्बियन स्थानों (त्योहारों, सहायता समूहों, डेटिंग ऐप्स) पर ट्रांस महिलाओं को शामिल करने के लिए दबाव डाला जा रहा है। यह लेस्बियन स्थानों की संस्कृति को बदल देता है और लेस्बियन (सिस) महिलाओं को दरकिनार कर देता है।
- युवा, किसी जेंडर में न बंधने वाले (नॉन-कॉन्फ़ॉर्मिंग) लेस्बियन पर पुरुष पहचान अपनाने के लिए दबाव डाला जा रहा है। बुच लेस्बियन पहचान को ट्रांसमर्दानेपन (ट्रांसमैस्कुलिनिटी) के रूप में फिर से तैयार किया जा रहा है। इससे लेस्बियनों का सफाया हो रहा है।

यह तर्क क्यों सही लगता है:

- ये दावे सही लगते हैं क्योंकि ये पहचान, दृश्यता (विजिबिलिटी) और सामुदायिक सीमाओं को लेकर गहरे भय से जुड़ते हैं। वे लेस्बियन यौनिकता से बाहर होने के परिणाम स्वरूप पुरुषों द्वारा की जाने वाली यौन हिंसा के गहरे डर से भी बंधे हुए हैं।
- कुछ लेस्बियनों के लिए, लेस्बियन पहचान को विशेष रूप से सिस-महिलाओं के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो अन्य सिस-महिलाओं के प्रति आकर्षित होती हैं। महिलाओं के रूप में ट्रांस महिलाओं की मान्यता इस सीमा को चुनौती देती है, जिससे चिंता पैदा होती है कि लेस्बियन पहचान को बाहरी लोगों द्वारा हल्का या फिर से परिभाषित किया जा सकता है।
- यह उन लोगों को सही लगता है जो महसूस करते हैं कि लेस्बियन विशिष्टता और अनुभव व्यापक LGBTQI+ आंदोलन के भीतर हाशिए पर या अदृश्य है।

मिथक को दूर करना (डिबंकिंग):

लेस्बियन समुदाय विविध है।

- लेस्बियन पहचान कभी भी अखंड नहीं रही है। इसमें हमेशा प्रेम, जेंडर और मूर्त रूप की विविध अभिव्यक्तियाँ शामिल रही हैं।
- कुछ ट्रांस महिलाएं लेस्बियन हैं। इससे सिस लेस्बियन ख़त्म नहीं हो जातीं हैं - इससे सिर्फ़ लेस्बियन पहचान में विविधता को पहचान मिलती है। इससे सभी के लिए बेहतर सुरक्षा की लड़ाई मज़बूत होती है।
- लेस्बियन महिलाएं अभी भी अपने आकर्षण और रिश्तों को स्वतंत्र रूप से परिभाषित करती हैं। कोई भी किसी को अपने रुझान (ओरिएंटेशन) के बाहर डेट करने के लिए मज़बूर नहीं करता है।
- ट्रांस पुरुष, ट्रांसजेंडर बनने से पहले खुद को लेस्बियन मान सकते हैं, लेकिन उनकी पहचान में बदलाव लेस्बियन होने को नकारता नहीं है।
- बुच लेस्बियन संस्कृति ट्रांसमर्दाना पहचान के साथ बनी हुई है, न कि उसकी जगह कोई और ले रहा है।

लेस्बियन अधिकारों का वास्तविक क्षरण

- LGBTQI+ सेवाओं के लिए फंडिंग में कटौती, LGBTQI+ विरोधी कानून, शिक्षा पर रूढ़िवादी हमले और दक्षिणपंथी प्रतिक्रिया लेस्बियनों के अधिकारों के लिए सच्चे खतरे हैं।
- ट्रांस दृश्यता (विजिबिलिटी) अभी भी बहुत सीमित है और अक्सर नकारात्मक है। असली मुद्दा सामान्य रूप से महिलाओं और क्वीयर जीवन की व्यापक मीडिया उपेक्षा है।
- बहिष्करण नारीवादी अक्सर ट्रांस अधिकारों को लक्षित करके इन क्वीयर विरोधी ताकतों के साथ गठबंधन करते हैं, जो अंत में गठबंधन को कमज़ोर करता है और लेस्बियनों को अधिक कमज़ोर बनाता है।

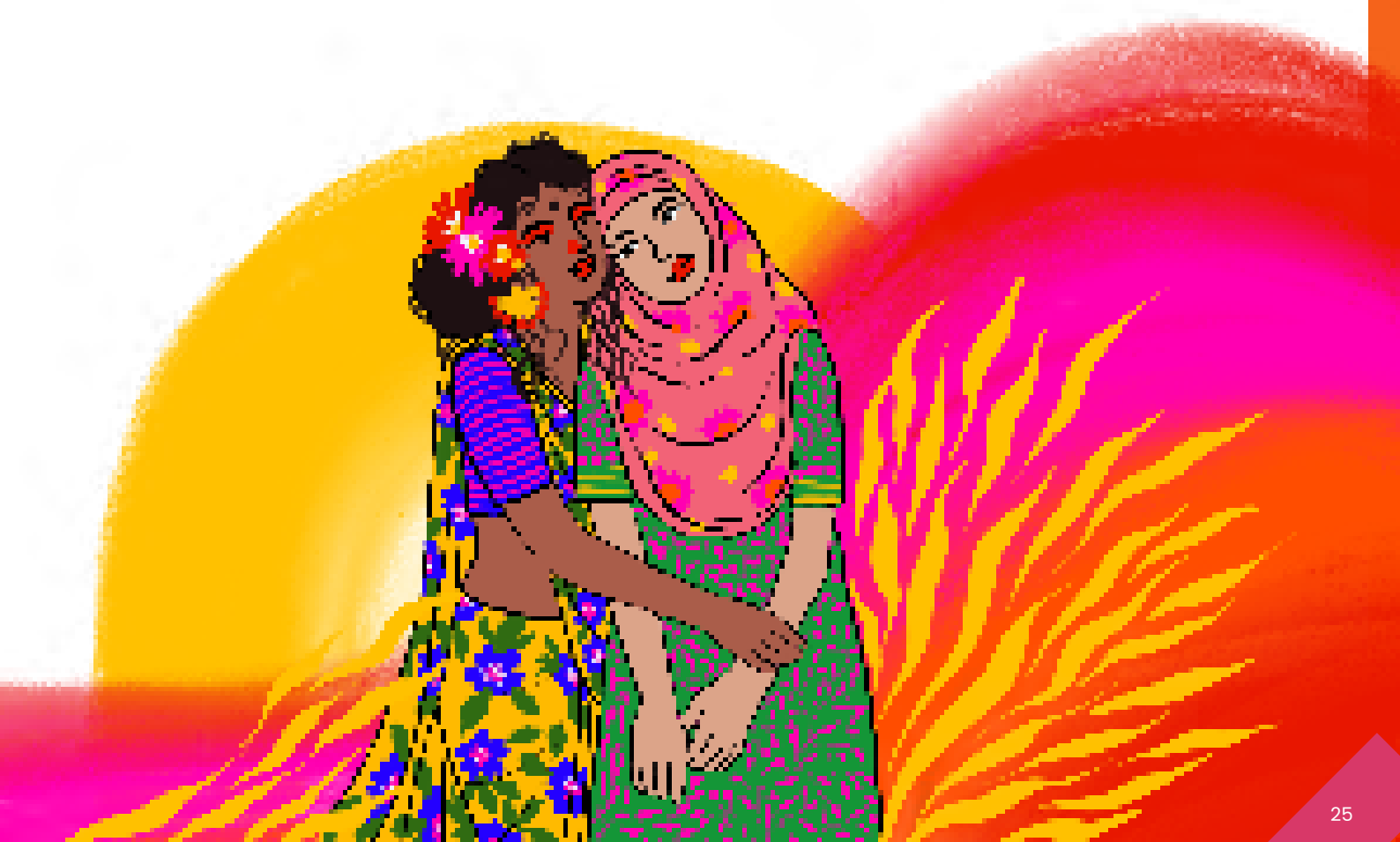

जवाबी ढांचा (काउंटर-फ़्रेम):

- ट्रांस महिलाएं महिलाएं हैं, और जो लेस्बियनें ट्रांस महिलाएं हैं, वे लेस्बियन समुदायों का हिस्सा हैं।

- ट्रांस-समावेशन लेस्बियनों को नहीं मिटाता है - इसके विपरीत, यह सुनिश्चित करता है कि सभी लेस्बियनों को शामिल किया जाए और सभी के लिए बेहतर सुरक्षा के लिए लड़ाई को मज़बूत किया जाए।

- लेस्बियन अधिकारों का वास्तविक क्षरण रूढ़िवादी प्रतिक्रिया से आता है, ट्रांस समावेशन से नहीं।

7. “बच्चों की रक्षा करें” का तर्क

“बच्चों को बहुत जल्दी ट्रांज़िशन के लिए मज़बूर किया जा रहा है; हमें उनकी रक्षा करनी चाहिए।”

इसके पीछे के दावे:

- बचपन का जेंडर असंतोष (डिस्फोरिया)[49] ट्रांस पहचान के प्रमाण के बजाय होमोफोबिया, ऑटिज़्म या मानसिक स्वास्थ्य संघर्षों का एक लक्षण है।
- ‘जेंडर असंतोष (डिस्फोरिया) तेज़ी से बढ़ता है[50]; सांस्कृतिक और सहकर्मी प्रभाव - विशेष रूप से ऑनलाइन - ट्रांस के रूप में पहचाने जाने वाले बच्चों में एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं।
- जेंडर असंतोष (डिस्फोरिया) का अनुभव करने वाले बच्चों का चिकित्साकरण समय से पहले और संभावित रूप से हानिकारक है।
- जो बच्चे जेंडर असंतोष (डिस्फोरिया) का अनुभव करते हैं, वे उन मेडिकल इलाज के लिए सही तरह से सहमति नहीं दे सकते हैं जिनके परिणाम ज़िंदगी भर रहते हैं, जैसे कि यौवन (प्यूबर्टी) रोकने वाली दवा, जेंडर-पुष्टि (जेंडर-अफर्मिंग)[51] हार्मोन थेरेपी, या सर्जरी।
- जेंडर परिवर्तन[52] से संबंधित चिकित्सा हस्तक्षेप से स्थायी शारीरिक परिवर्तन और अपरिवर्तनीय नुकसान हो सकता है (उदाहरण के लिए, बांझपन, यौन कार्य की हानि, हड्डी या हृदय संबंधी समस्याएं)।
- कई बच्चे यौवन (प्यूबर्टी) के दौरान “विरत” हो जाते हैं (जेंडर डिस्फोरिया से बाहर निकल आते हैं)।
- जेंडर-पुष्टि (जेंडर-अफर्मिंग) देखभाल के समर्थक डॉक्टरों द्वारा माता-पिता के अधिकारों को कम किया जा रहा है।

---

[49]**बचपन का जेंडर असंतोष (डिस्फोरिया)** का मतलब है, कुछ बच्चों को होने वाली चिह्नित और लगातार परेशानी, क्योंकि उनके अनुभव या व्यक्त जेंडर और जन्म के समय उन्हें दिए गए जेंडर के बीच कोई मेल नहीं होता। इस स्थिति की पहचान यह है कि उन्हें अपनी प्राथमिक और / या द्वितीयक (सेकेंडरी) सेक्स विशेषताओं से बहुत ज़्यादा परेशानी होती है, या उन्हें दूसरे जेंडर जैसा बर्ताव करने की बहुत ज़्यादा इच्छा होती है।

[50]रैपिड-ऑनसेट जेंडर डिस्फोरिया (ROGD) एक चिकित्सकीय रूप से मान्यता प्राप्त निदान के बजाय एक प्रस्तावित, अत्यधिक विवादास्पद परिकल्पना है जो एक पैटर्न को संदर्भित करता है जहाँ किशोर या युवा वयस्कों (अक्सर जन्म के समय महिला को सौंपा जाता है) को जेंडर डिस्फोरिया का अचानक या देर से उभरना महसूस होता है, आमतौर पर यौवन (प्यूबर्टी) के दौरान या बाद में, बिना जेंडर से जुड़ी परेशानी के बचपन के पहले के इतिहास के।

[51]जेंडर-पुष्टि (जेंडर-अफर्मिंग) प्रथाओं, देखभाल, नीतियों या भाषा को संदर्भित करती है जो किसी व्यक्ति की जेंडर पहचान और अभिव्यक्ति का सम्मान और समर्थन करती है। यह किसी के जेंडर के जीवित अनुभव को मान्य करने के बारे में है, चाहे वो स्वास्थ्य देखभाल, सामाजिक मान्यता, या रोजमर्रा की बातचीत के माध्यम से हो।

[52]जेंडर परिवर्तन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें किसी की लिंग पहचान की पुष्टि करने के लिए सामाजिक, कानूनी और / या चिकित्सा कदम शामिल हो सकते हैं।

यह तर्क क्यों सही लगता है:

- फ़्रेमिंग व्यापक संस्कृति-युद्ध कथाओं के साथ मेल खाती है। यह संस्थानों के प्रति अविश्वास और सामाजिक परिवर्तन के डर जैसी सांस्कृतिक चिंताओं को आकर्षित करती है।
- माता-पिता के अधिकार के नारों के साथ मेल खाती है जैसे 'हमारे बच्चों के साथ खिलवाड़ मत करो' और नियंत्रण खोने का डर।
- बच्चों को नुकसान से बचाने के लिए 'सहज नैतिक भावना (डिफ़ॉल्ट मोरल इंट्यूशन)' को आकर्षित करता है। यह केवल-ट्रांस नारीवादियों को कमज़ोर बच्चों के रक्षक के रूप में प्रस्तुत करता है और उनकी मासूमियत, अपरिपक्वता और सहमति देने में असमर्थता पर ज़ोर देता है।
- अपरिवर्तनीयता के डर पर ध्यान खींचता है - यौवन (प्यूबर्टी) अवरोधक, हार्मोन थेरेपी, और सर्जरी को स्थायी, जीवन-परिवर्तनकारी निर्णयों के रूप में चित्रित किया जाता है, जो बहुत कम उम्र में किए जाते हैं।

मिथक को दूर करना (डिबंकिंग):

> **युवा लोग अधिकार-धारक हैं जो अपनी विकसित क्षमताओं के अनुरूप अपने स्वास्थ्य और जेंडर के बारे में स्वायत्त निर्णय लेने में सक्षम हैं।**

- ट्रांस बच्चे और किशोर अक्सर बहुत कम उम्र में अपनी जेंडर पहचान के बारे में जागरूकता व्यक्त करते हैं।[53] क्षमताओं को विकसित करने का सिद्धांत[54] इस मान्यता का समर्थन करता है कि बच्चे और किशोर अपने जेंडर के बारे में बड़ों की सोच से पहले ही सही बातें कह सकते हैं।
- ऐसी नीतियां जो सख्ती से उम्र की सीमा तय करती हैं (जैसे, "18 साल से कम उम्र में इलाज नहीं) बदलती क्षमताओं के सिद्धांत के साथ टकराव पैदा कर सकती हैं, जो कड़े नियमों के बजाय **व्यक्तिगत मूल्यांकन** पर ज़ोर देती है।
- उभरती क्षमताओं का सम्मान करने से युवा ट्रांस लोगों के आत्मनिर्णय, गोपनीयता और स्वास्थ्य के अधिकारों को बनाए रखने में मदद मिलती है।

> **जेंडर-पुष्टि (जेंडर-अफर्मिंग) देखभाल सुरक्षित है, मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करती है और जीवन बचाती है।**

- शुरुआती यौवन (प्यूबर्टी) वाले बच्चों में दशकों से यौवन (प्यूबर्टी) रोकने वाली दवाओं का सुरक्षित रूप से उपयोग किया जाता रहा है।[55]
- ट्रांस युवाओं के लिए, यौवन (प्यूबर्टी) अवरोधक समय को बढ़ा देते हैं, अवांछित, परेशान करने वाले परिवर्तनों को रोकते हैं और भविष्य में अधिक आक्रामक (इन्वेसिव) हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है।[56]
- साक्ष्य कई युवाओं में मानसिक स्वास्थ्य सुधार (जैसे चिंता, अवसाद[57] और आत्महत्या में कमी[58] [59]) दिखाते हैं जो यौवन (प्यूबर्टी) को रोकने वाली दवाओं और अन्य प्रकार की जेंडर-पुष्टि (जेंडर-अफर्मिंग) देखभाल तक पहुँच की सुविधा मिलती हैं।

---

[55]महफ़ूदा, एस., मूर, जे. के., सियाफ़ारिकास, ए., हेविट, टी., गैंटी, यू., लिन, ए., और ज़ेफ़, एफ. डी. (2017). प्यूबर्टी सप्रेशन इन ट्रांसजेंडर चिल्ड्रेन एंड एडोलेसेंट. द लैंसेट डायबिटीज़ एंड एंडोक्राइनोलॉजी, 5(10), 816–826. https://doi.org/10.1016/S2213-8587(17)30099-2

[56]ली जे.वाई., रोसेंथल एस.एम. जेंडर-अफर्मिंग केयर ऑफ़ ट्रांसजेंडर एंड जेंडर-डायवर्स यूथ : करंट कॉन्सेप्ट्स. एनु रेव मेड. 2023 जनवरी 27;74:107-116. doi: 10.1146/annurev-med-043021-032007. Epub 2022 अक्टूबर 19. PMID: 36260812; PMCID: PMC11045042.

[57]टॉर्डोफ़, डी. एम., और अन्य. (2022). "मेंटल हेल्थ आउटकम्स इन ट्रांसजेंडर और नॉनबाइनरी यूथ रिसीविंग जेंडर-अफ़र्मिंग केयर" JAMA नेटवर्क ओपन, 5(8): e2222830

[58]इबिडेम (उसी स्रोत और पृष्ठ से लिया गया)

[59]जैक्सन, डी., और अन्य. (2023). सुसाइड रिलेटेड आउटकम्स फॉलोइंग जेंडर-अफर्मिंग सर्जरी, हॉर्मोन, एंड/ और प्यूबर्टी ब्लॉकर्स: ए नैरेटिव रिव्यू. PMC.

जवाबी ढांचा (काउंटर-फ़्रेम):

- सुरक्षित, उत्तरदायी देखभाल बाल सुरक्षा का हिस्सा है। जेंडर असंतोष (डिस्फोरिया) का अनुभव करने वाले बच्चों और किशोरों के लिए जेंडर-पुष्टि (जेंडर-अफर्मिंग) देखभाल की कमी में आत्महत्या जैसे अपरिवर्तनीय जोखिम हैं।

- अधिकांश ट्रांस लोग परिवर्तनकाल के बाद पनपते हैं। परिवर्तनकाल वास्तविक है लेकिन दुर्लभ है; अधिकांश ट्रांस लोग अपने परिवर्तनकाल से संतुष्ट रहते हैं।

- संक्रमण (ट्रांजिशन) को रोकना या उलटना (डिट्रांज़िशन) कई कारणों से होता है, केवल अफसोस से नहीं (जैसे, सामाजिक दबाव, समर्थन की कमी, पारिवारिक अस्वीकृति, भेदभाव)।

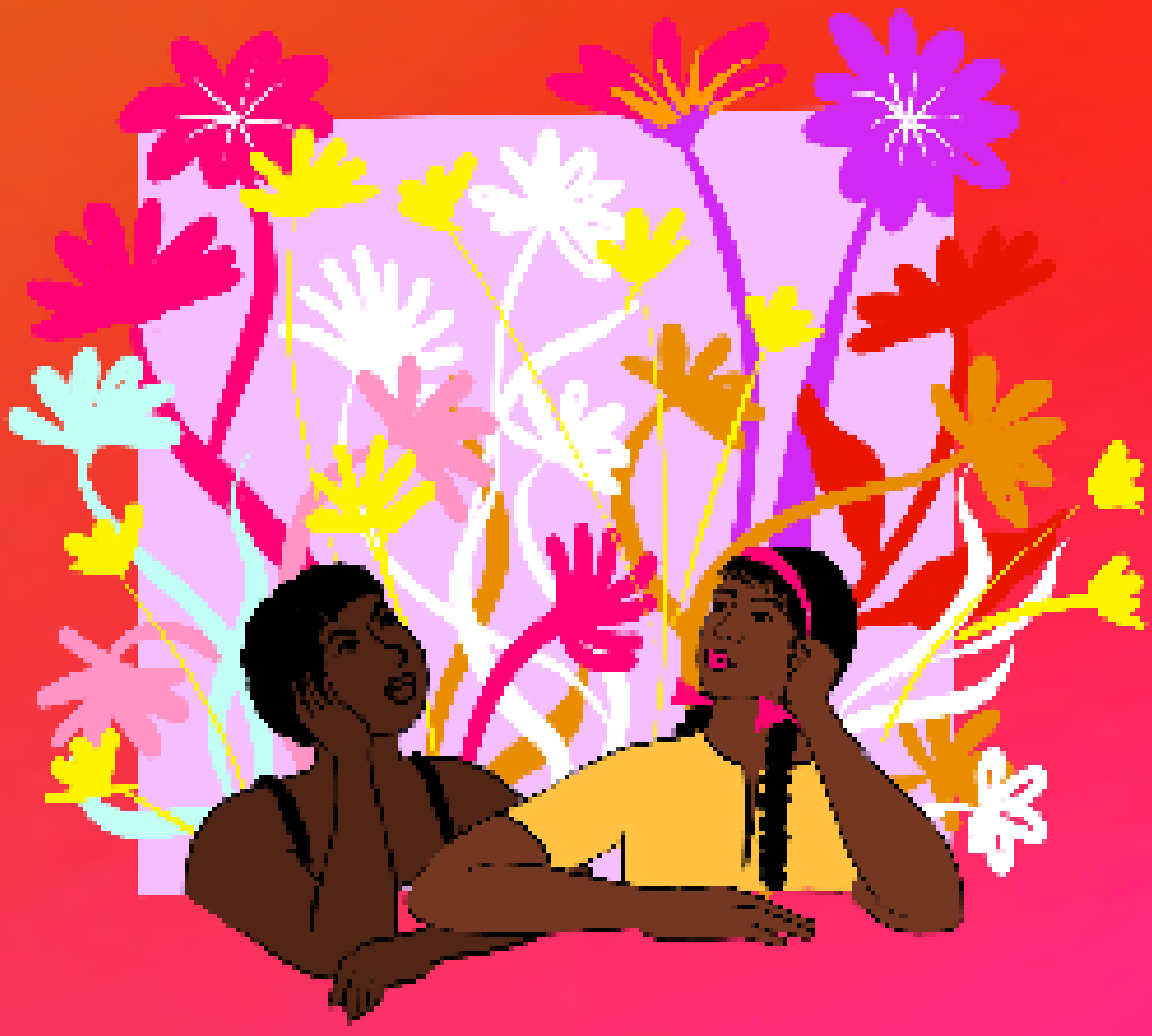

count me IN!